राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय ग़ाज़ीपुर

ऐतिहासिक धरोहर

आज दिनांक 13.01.2020 को राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय ग़ाज़ीपुर में उड़ीसा के ऐतिहासिक धरोहरों पर एक कार्यशाला आयोजित हुई । इसका आयोजन ऐतिहासिक धरोहर क्लब राजकीय महिला स्नातकोत्तर महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय ग़ाज़ीपुर के द्वारा किया गया । इस कार्यशाला में बोलते हुए डॉक्टर विकास सिंह ने बताया कि ओडिशा भारत के पूर्वी तट पर स्थित एक अत्यंत महत्वपूर्ण राज्य है जिसकी सीमाएं बंगाल की खाड़ी से मिलती है साथ ही इस राज्य का एक बड़ा इलाक़ा अत्यंत दुर्गम बनो वाला एवं पठारी है जिसके चलते यहाँ पर ऐतिहासिक काल में मानवीय सभ्यता अपने में अत्यंत विशिष्ट एवं अनूठी थी ।

उड़ीसा के सर्वोत्कृष्ट स्थलीय स्थान, जैसा कि पहले जाना जाता था, ने मगध वंश और मौर्य राजवंश को आकर्षित किया जिन्होंने उड़ीसा के समृद्ध तटीय बंदरगाहों का प्रभार लेने के लिए युद्ध छेड़ दिया। अशोक के कलिंग युद्ध के मुख्य कारणों में से एक ताम्रलिप्त, पलोरा, दोसरीन, कण्नगर, दंतापुर, पिथुंडा और मनिका पटाना पर नियंत्रण हासिल करना था, जो रणनीतिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण थे और सभी प्राचीन उड़ीसा में स्थित थे। संसाधनों से समृद्ध, ओडिशा कभी हीरे, मोती, शंख, नील, मक्का, मसालों और मलमल और अच्छी गुणवत्ता वाले रेशम जैसे वस्त्रों का सबसे बड़ा व्यापारी था। कलिंग का युद्ध अशोक के जीवन का एक प्रमुख मोड़ था जब उसने बौद्ध धर्म ग्रहण किया इसलिए यह एक प्रमुख बौद्ध साम्राज्य भी रहा है। यहाँ हम जिस शासक के बारे में सबसे पहले उल्लेख पाते हैं वह महान शासक खारवेल था जिसका एक अभिलेख हमें उड़ीसा की वर्तमान राजधानी भुवनेश्वर के समीप स्थित हाथीगुम्फा से मिलता है । जिसमें वहाँ कि उस प्रतापी राजा खारवेल के विगत वर्षों के शासन कालों की उपलब्धियां क्रमवार वर्णित है । भारतीय इतिहास का यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य है जैसा कि पूर्वी तट पर अक्सर तूफ़ान आया करते हैं प्राचीन भारत के पुरातात्विक साक्ष्यों में उस तट पर तूफ़ान आने का सबसे प्रारंभिक साक्ष्य हमें खारवेल के उस लेख में मिलता साथ ही खारवेल के उस लेख में यह भी अंकित है कि उसने किस तरह से प्रतापी नन्द राजा को परास्त कर उनसे जिनकी एक प्रख्यात मूर्ति उसने हासिल

की थी । जब हम ओडिशा के मंदिरों पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि यहाँ पर मंदिर निर्माण की नागर सैली के सर्वश्रेष्ठ मंदिर यहाँ पर उपस्थित है चाहे वह भुवनेश्वर में स्थित लिंगराज मंदिर हो जो की भारत के सबसे बड़े मंदिरों में शामिल है इसी तरह से ओडिशा में स्थित कोणार्क का सूर्य मंदिर भारत के प्राचीनतम गौरवशाली मंदिरों में से एक है जिसकी कीर्ति पताका उसकी पूरी तरह से नष्ट होने पर भी यथावत है । हिन्दू धर्म के साथ साथ ओडिशा बौद्ध और जैन धर्म का भी बड़ा केंद्र था।

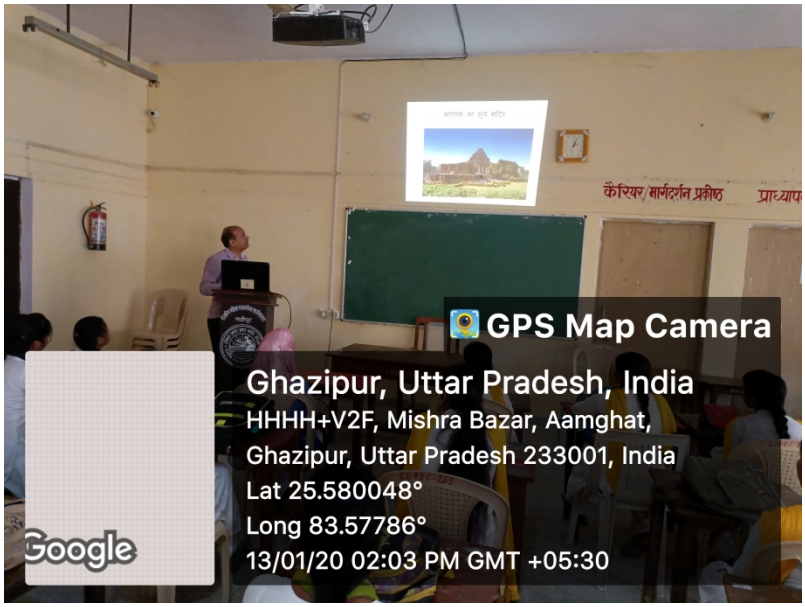

भुवनेश्वर के समीप स्थित उदयागिरि की गुफाओं से हमें एक बड़े प्राचीन स्तूप का अवशेष मिलता है वहाँ पर प्राप्त विभिन्न अवशेषों से पता चलता है कि वह उस समय बड़ा शिक्षा का केंद्र था। भारत के जीवंत राज्य में, ओडिशा की संस्कृति भव्य इतिहास, शानदार वास्तुकला, सनसनीखेज संगीत और नृत्य रूपों, प्रभावशाली हस्तशिल्प और उल्लेखनीय सांस्कृतिक विविधता का एक उत्कृष्ट प्रतिनिधित्व है। जगन्नाथ संस्कृति की एक अनूठी संस्कृति पर गर्व करते हुए, ओडिशा में लोग पुराने रीति-रिवाजों और परंपराओं का पालन

करते हैं, भले ही 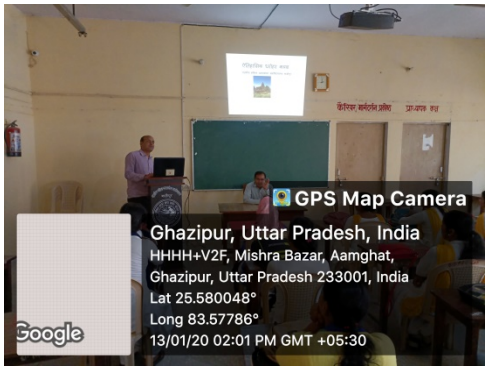

राज्य अब शहरीकृत हो गया हो। ऐसा माना जाता है कि कलिंग ने भारतीय सभ्यता के सांस्कृतिक मैट्रिक्स में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पुरानी परंपराएं और रीति-रिवाज तीन-स्तरीय संरचना पर आधारित हैं जिसमें आदिवासी, लोक और शहरी शामिल हैं, और विभिन्न संस्कृतियों के लोग एक कोकून में एक साथ पनपते हैं। ओडिशा में जनजातियों की सबसे बड़ी संख्या है, 62 तक जिनमें 13 आदिम जनजातीय समुदाय शामिल हैं। आदिवासी (आदिवासी), वनबासी (वनवासी), और गिरिजाना (पर्वतवासी) राज्य के 22.13% का गठन करते हैं। उनका जीवन वन पारिस्थितिकी तंत्र के इर्द-गिर्द बुना हुआ है और वे प्रकृति में उपलब्ध स्रोतों के माध्यम से अपनी मूलभूत सुविधाएं जुटाते हैं। उड़ीसा की जनजातियाँ तीन भाषाई विभागों से संबंधित हैं और उनके बीच कई सामाजिक-सांस्कृतिक समानताएँ हैं। हालाँकि, प्रत्येक आदिवासी समुदाय के रहने का एक अलग तरीका है और उनके जीवन का अनूठा तरीका उनके परिधान विकल्पों, गहनों और घरों के माध्यम से भिन्न है। वे अपने संगीत, नृत्य अनुष्ठानों, त्योहारों और हस्तशिल्प के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक पहचान और विशिष्टता भी व्यक्त करते हैं।